Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 6 | ISSUE : 1 | JANUARY 2020

अंग्रेज कालीन भारतीय दस्तकारों की स्थिति का मूल्यांकन

श्याम कुमार [1]

[1] **इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय मैदान गढ़ी, नई दिल्ली- 110068**

ABSTRACT:

KEYWORDS:

SUBJECT: इतिहास

कंपनी के कर्मचारियों ने बंगाल में राजनीतिक सत्ता प्राप्त करते ही बंगाल में दस्तकारों का शोषण करना आरंभ कर दिया। उन्होंने भारतीय दस्तकारों और जुलाहों को ऊंचे मूल्य पर कच्चा माल दिया। उनसे एक निश्चित समय में निश्चित मात्रा में और निश्चित अस्तर की बनी हुई वस्तुओं की मांग की तथा उसका मूल्य भी मनमाना निर्धारित किया। इन नीतियों से कपड़ा बनाने का व्यवसाय कारीगरों के लिए लाभप्रद ना रह गया। हजारों कारीगरों ने अपने इस पैतृक व्यवसाय को छोड़ दिया और बंगाल का वस्त्र उद्योग नष्ट हो गया। कंपनी का यह आर्थिक शोषण दिन- पर - दिन बढ़ता ही गया ।

1813 ईस्वी के कंपनी के आदेश- पत्र के द्वारा सभी अंग्रेज व्यापारियों को भारत से व्यापार करने की आज्ञा प्रदान कर दी गई। जिससे शोषण करने वालों की संख्या में वृद्धि हुई। ब्रिटेन और अंग्रेज भारतीय सरकार ने अपने- अपने व्यापारिक नीतियों के द्वारा भारतीय व्यापार को नष्ट किया। ब्रिटेन ने भारत से आयात होने वाले माल पर अत्यधिक कर लगाया। जिससे ब्रिटेन के उद्योगों को संरक्षण मिला जबकि भारत सरकार ने भारत में आयात होने वाले माल पर कम -से - कम कर लिया जिससे वहां का बना हुआ माल भारत में भली-भांति बिक सके। इस प्रकार दोनों ओर से भारतीय व्यापार पर दबाव पड़ा और वह नष्ट हुआ। विदेशी व्यापार के नष्ट होने से भारतीय उद्योग धंधे भी नष्ट हुए। ब्रिटेन में औद्योगिक क्रांति के हो जाने से ब्रिटिश और भारतीय सरकार के नीति पर और अधिक प्रभाव पड़ा। ब्रिटेन को अपनी मशीनों से बढ़ते हुए उत्पाद के लिए भारत में कच्चे माल की अधिक मात्रा में आवश्यकता हुई और अपने बने हुए माल के लिए भारत में बाजार की आवश्यकता हुई।

इस कारण 1833 ईस्वी में भारत सरकार ने स्वतंत्र व्यापार की नीति का अनुकरण किया और भारतीय आयात - निर्यात करो को समाप्त करना आरंभ किया। इससे ब्रिटेन को सस्ता कच्चा माल भारत में मिला और भारत में उसकी बनी हुई वस्तुओं को सुविधा पूर्ण बाजार। भारत में रेलवे की स्थापना से ब्रिटेन की बनी हुई वस्तुओं को दूर-दूर गांव और कस्बों तक पहुंचाने में सुविधा हुई तथा देश के भीतरी भागों से अंग्रेजों को कच्चे माल को खरीदने की सुविधा प्राप्त हुई । इससे भारतीय व्यापार और उद्योग बहुत तीव्रता से नष्ट हुआ।

भारत की हाथ की बनी वस्तुओं का ब्रिटेन की मशीनों से बनी हुई वस्तुओं से मुकाबला करना स्वयं में ही दुष्कर था। ब्रिटेन और भारत सरकार की नीतियों ने इस मुकाबले को असंभव बना दिया।

भारत में सभी उद्योग नष्ट हो गए । भारतीय कपड़ा उद्योग जो संसार में सबसे अधिक विख्यात था पूर्णत नष्ट हो गया। इससे भारत में निर्धनता आई, भूमि पर दबाव पड़ा और किसानों की अतिरिक्त आय जो छोटे- छोटे उद्योगों मुख्यत सूत की कटाई से हुआ करती थी नष्ट हो गई। भारत का धन ब्रिटेन गया। वस्तुतः भारत ब्रिटेन के लिए कच्चे माल का उत्पादन करने वाला एक विशाल भूखंड और ब्रिटेन के द्वारा बनाए गए माल की खपत के लिए एक विस्तृत बाजार बन गया। इस प्रकार भारत की निर्धनता का एक मुख्य कारण उसके उद्योगों का नष्ट हो जाना था और इसका उत्तरदायित्व भी विदेशी अंग्रेजी सरकार पर था।

भारत की आर्थिक स्थिति में कुछ सुधार संभव हो सकता था यदि सरकार ने यहां मशीनों से युक्त उद्योगों को आरंभ करने में कुछ रुचि दिखाई होती। परंतु भारत सरकार ने ऐसा नहीं किया।

अंग्रेजों ने तो 19 वी सदी के उत्तरार्ध में व्यक्तिगत प्रयत्नों से आरंभ हुए भारतीय उद्योगों को भी संरक्षण नहीं दीया। बाद के समय में जब ब्रिटेन में बहुत पूंजी हो गई और उस अतिरिक्त पूंजी को भारत में

लगाया जाना लाभप्रद समझा गया तभी यहां कुछ उद्योगों को आरंभ किया गया। इसी कारण भारत में उद्योगों का आरंभ ब्रिटिश पूंजीपतियों द्वारा किया गया। परंतु इस क्षेत्र में भी भारत सरकार ने उन्हें उद्योगों को संरक्षण दिया जो ब्रिटेन में आरंभ नहीं किया जा सकते थे। भारतीय उद्योगपति इस क्षेत्र में इसी कारण देर से आए और उन्हें अनेक और सुविधाओं का सामना करना पड़ा।

भारत मैं सर्वप्रथम 1850 ईस्वी में उद्योगों का आरंभ हुआ तथा कपड़ा और कोयला निकालने के उद्योग शुरू किए गए हैं। उसके पश्चात धीरे-धीरे लकड़ी ,कागज ,चमरा ,लोहा, चीनी, सीमेंट ,कांच आदि उद्योग आरंभ हुए थे। यह सभी उद्योग अधिकांशत ब्रिटिश पूंजीपतियों के हाथों में थे।

भारतीयों का मुख्य भाग केवल कपड़ा और चीनी के उद्योगों में रहा। भारतीय उद्योगपतियों को सरकार कोई सुविधा प्रदान नहीं करती थी। इससे भारत में उद्योग का विकास बहुत धीरे-धीरे हुआ। भारत के उद्योगों के विकास में एक बड़ी बाधा आधारभूत उद्योगों की कमी भी रही जैसे - भारत में इस्पात का उत्पादन 1913 ईस्वी में आरंभ किया।

भारत भूमि औद्योगिक प्रगति के कारण अपनी आर्थिक स्थिति को ठीक करने में एक लंबे समय तक समर्थ ना हो सका। इसके अतिरिक्त भारत के औद्योगिक विकास में एक और भी त्रुटि रही। भारतीय उद्योग कुछ विशेष क्षेत्रों में स्थापित हुए। जिससे क्षेत्रीय आर्थिक असमानताओं में वृद्धि हुई और भारत को एक सूत्र में बांधने में असुविधा हुई।

इस प्रकार ब्रिटिश शासन में भारतीय कृषि नष्ट हुई ,भारत के परंपरागत और श्रेष्ठ उद्योग नष्ट हुए ,नवीन आधुनिक उद्योगों का विकास संभव ना हुआ। भारत का व्यापार भारत के पक्ष में ना रहा और भारत का धन विदेश गया। यह सभी कुछ सरकार की नीतियों के परिणाम स्वरूप हुआ। जिन्होंने भारत के हित को पूर्णता भुलाकर ब्रिटेन के आर्थिक हितों की पूर्ति की।

इसी कारण सभी विद्वान यह स्वीकार करते हैं कि अंग्रेजी शासन का सबसे बड़ा दोष ब्रिटेन द्वारा भारत का आर्थिक शोषण था।

REFERENCES

1. Eric Stokes: The Peasant and the Raj.

2. Morris D. Morris: India Economic in the Nineteenth century.

3. R.C. Dutt: Economic History of India.

4. B.H. Baden Powell: The Land Systems of British India.

श्याम कुमार

कमरा मोहल्ला चंदवारा , बनारस बैंक चौक, मुजफ्फरपुर (बिहार) पिन कोड -842001